International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 27-06-2021, Accepted: 12-07-2021, Published: 28-07-2021
Volume 7; Issue 4; 2021, Page No. 150-151

विश्व क्षितिज का दैदीप्यमान कविः गोस्वामी तुलसीदास

ज्योत्स्ना आनंद
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
अखिल भारतीय भक्ति काव्यधारा के सिरमौर कवि गोस्वामी तुलसीदास का काव्य संपूर्ण भारतीय जन–मानस में श्रद्धा का विषय है । प्रस्तुत शोध–आलेख का ध्येय गोस्वामी तुलसीदास के समग्र काव्य की प्रासंगिकता का विवेचन प्रस्तुत करना रहा है। गोस्वामी तुलसीदास के कृतित्व में अंकित संकुचित रूढ़ वैचारिक सीमाओं के सात्विक अतिक्रमण के प्रमुख आयामों को आलोकित करना ही शोध–आलेख का मुख्य उद्देश्य रहा है।

मूल शब्दः भक्ति काव्यधारा, सात्विक, ज्योत्स्ना, दैदीप्यमान, हिंदी साहित्येतिहास, कालजयी

प्रस्तावना

विश्व प्रकृति के भौगोलिक चक्र (Geographic Cycle) में ज्योत्स्ना एवं प्रकाश दोनों के महत्त्व प्रासंगिक है। यूँ कभी–कभी हम दीप के प्रकाश के समक्ष चिमनी का महत्त्व भुला दिया करते हैं! जबकि यह दीप के प्रकाश को दूरगामी प्रभावों से भर देती है और अधिक दैदीप्यता प्रदान करती है।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का व्यक्तित्व ही ऐसा है कि जिस–जिस काव्यकार ने उनके आदर्श पर लेखनी चलाई, वह स्वयं दैदीप्यमान हो गया। गोस्वामी तुलसीदास इस श्रेणी में अग्रणी हैं।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिंदी साहित्येतिहास के स्वरचित "कच्चे ढाँचे" में स्वीकारते हैं कि – "हिंदी साहित्य के क्षेत्र में भक्ति का परमोज्ज्वल प्रकाश विक्रम की 17वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में गोस्वामी तुलसीदास की वाणी द्वारा स्फुरित हुआ था।"

यह कहते हुए आचार्य रामचंद्र शुक्ल इन्हें 'भक्तशिरोमणि' से संबोधित कर 'हिंदी काव्य की प्रौढ़ता के युग का आरंभ मानते हैं।'

खैर.... गोस्वामी की काव्यमयी प्रतिभा पर मोहित हो स्वयं सूरदास, बेनीमाधव सहित नंददास ने भी इनकी वंदना की थी। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' मध्यकाल की विशिष्ट जटिल परिस्थितियों के मध्य 'भारतीय नभ के प्रभापूर्य' के रूप में गोस्वामी जी के आगमन की बात करते हैं –

"भारत के नभ का प्रभापूर्य
शीतलच्छाय सांस्कृतिक सूर्य
अस्तमित आज के तमस्तूर्य दिङ्मण्डल;
उर के आसन पर शिरस्त्राण
शासन करते हैं मुसलमान;
है उर्मिल जल, निश्चलत्प्राण पर शतदल।"[3]

दरअसल ... रामभक्ति काव्यधारा के सिरमौर गोस्वामी तुलसीदास की काव्य भागीरथी के बहुतेरे घाट हैं जहाँ उनके काव्य की मूलधारा तो भक्ति रस से ओत–प्रोत है किंतु समकालीन राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक परिस्थितियों से क्षुब्ध होकर वे समाज के विभिन्न आयामों पर विसंगतियों पर प्रहार करते चलते हैं; जहाँ कविता उनके लिए साध्य के बरक्स साधन मात्र रह जाती है –

"खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी।
जीविका–बिहीन लोग सीद्यमान, सोच–बस,
कहैं एक एकन सों कहाँ जाई, का करी?"

गोस्वामी जी भक्ति के स्तर पर वर्ण–व्यवस्था को नहीं स्वीकारते हैं। वह शंबूक वध के प्रसंग का लोप तथा 'शबरी' को 'भामिनी' का संबोधन उनकी दृष्टि को स्पष्ट करता है। जाति व्यवस्था पर प्रहार करने से भी गोस्वामी जी नहीं चूकते हैं –

"धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूत कहौ, जोलहा कहौ कोऊ।
काहू की बेटी सों बेटा न ब्याहब, काहू की जाति बिगार न सोऊ।
तुलसी सरनाम, गुलामु है रामु को, जाको रुचौ सौ कहै कछु सोऊ।
माँगि के रवैबो, मसीत के सोइबो, लैबो एकु न दैबो को दोऊ।"

इसके बावजूद वह महसूस करते थे कि –

"सबसे कठिन जाति अपमाना।"

अपने युग की वैचारिक सीमाओं का अतिक्रमण क्रांतिकारी ढंग से करते हुए गोस्वामी तुलसीदास मध्यकालीन जड़ता के परिवेश में बंधी नारी की परतंत्रता के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हैं –

"कत बिधि सृजी नारि जग माहीं, पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।

गोस्वामी जी द्वारा पुष्पवाटिका में राम और सीता का विवाहपूर्व मिलन दूरगामी दृष्टि का परिचायक है –

"करत बतकही अनुज सन, मन सिय रूप लोभान।
मुख सरोज मकरंद छवि, करई मधुप रस पान।।"

वह रामराज्य की अवधारणा में एक पत्नीव्रत का आदर्श समायोजित करते हैं–

"एकपत्नीव्रत रत सब झारी। ते मन बच क्रम पति हितकारी।।"

वर्तमान शहरीकरण के दौर में जब वैश्विक गाँव की मृगमरीचिका ने हमें बखूबी छला है तब गोस्वामी जी का लेखन ही भारतीय परिवार–व्यवस्था की अभिरक्षा में स्तंभ स्वरूप नज़र आता है –

"निजकर गृह परिचरजा करई। रामचंद्र आयसु अनुसरई।।"

तत्कालीन राजव्यवस्था के दौर व सामंती परिवेश से लोक सरोकारों को नदारद देखकर गोस्वामी जी कर्त्तव्यों को स्मरण कराते हैं –

"गोढ़ गँवार नृपाल महि, जमन महा महिपल।
साम न दाम न भेद कलि, केवल दण्ड कराल।।"

वह कलियुग के विरुद्ध 'रामराज्य' को स्थापित करते हैं। इसके माध्यम से गोस्वामी जी स्वर्णिम व स्वस्थ भारत का स्वप्न देखते प्रतीत होते हैं –

"दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज्य काहुहिं नहीं व्यापा।"

गोस्वामी जी काव्यकारों के आदर्श हैं। इनके कृतित्व पर आकृष्ट होकर न केवल देश अपितु अनेक पाश्चात्य विद्वान इनके ग्रंथों का गहन–गंभीर अध्ययन करते हैं, जिसका सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक महत्त्व है। इनमें होरेस विल्सन, गार्सा द तासी, फ्रेडरिक समन ग्राउस, अब्राहम जॉर्ज ग्रियर्सन, फादर कामिल बुल्के एवं प्रो० चिन तिङ्ग इत्यादि नाम उल्लेखनीय हैं। मुझे होरेस विलसन का 'दि रिलिजंस सेक्ट्स ऑफ हिन्दूज' नामक लेख स्मरण हो जाता है, वो एशियाटिक रिसर्चेस में 1828 एवं 1882 ई० में प्रकाशित हुआ था। तत्पश्चात् फ्रांसीसी विद्वान गार्सा द तासी ने फ्रेंच भाषा में 'श्रीरामचरितमानस' के महत्त्व पर 'इस्तवार द ल लितरेत्यूर ऐंदुई ऐ ऐंदुस्तानी' (1839 ई०) में लिखा। एक अन्य महत्त्वपूर्ण नाम फ्रेडरिक सालमान ग्राउस का है। उन्होंने 07 वर्षों के अथक परिश्रम द्वारा 700 पृष्ठों में 'श्रीरामचरितमानस' का अंग्रेज़ी भाषा में 'रामायण ऑफ तुलसीदास' शीर्षक से अनुवाद किया। यह 1871 से 1978 के मध्य का दौर था। इनके द्वारा निकाले गये निष्कर्षों का विश्वव्यापी महत्त्व हो चला है –
"मानस काव्य मानव जाति के सामान्य जीवन का विश्वनीय पथ प्रदर्शक है।"[4]
'श्रीरामचरितमानस' का विश्वव्यापी महत्त्व स्वयं वेल्जियम निवासी फादर कामिल बुल्के एक पंक्ति – "धन्य जनम जगतीतल तासू। पिताहिं प्रमोद चरित सुनि जासू' से प्रभावित होकर अपना देश छोड़कर भारत निवासी हो गये और संपूर्ण जीवन गोस्वामी जी के वाङ्मय के अध्ययन–मनन में समर्पित कर दिया। अपने जीवन के अहम् क्षणों में फादर कामिल बुल्के अपनी पुस्तक "राम कथा की उत्पत्ति और विकास" के माध्यम से स्वीकारते हैं– "तुलसीदास अपने जीवनकाल से ऊपर उठकर एक गंभीर तथा एकात्मक विश्वदर्शन को दृष्टांतपूर्वक प्रस्तुत करते हैं।"[5]

निष्कर्ष

अस्तु, विश्व सदैव कालजयी रचनाकारों का ऋणी रहा है। गोस्वामी तुलसीदास इस श्रेणी में सिरमौर हैं। गोस्वामी जी के काव्य का मुख्य आधार मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम सहित समस्त जड़–चेतन बन पड़ा है। गोस्वामी जी समस्त चराचर को स्तुत्य मानकर वंदना करते हैं –

"जड़ चेतन जग जीव जत सकल राम मय जानि
बँदउ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि।।"

निश्चित ही गोस्वामी जी वैश्विक क्षितिज पर नक्षत्र के समान युगों–युगों तक दैदीप्यमान रहेंगे .....।

संदर्भ सूची

1. हिंदी साहित्य का इतिहासः आचार्य रामचंद्र शुक्ल, प्रथम संस्करणः 2002; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ–82
2. वही, पृष्ठ–82
3. तुलसीदास (कविता संग्रह), निराला, संस्करण 2009, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–11
4. 'आजकल' पत्रिका, 2012, जुलाई अंक, पृष्ठ–16
5. श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस, गोरखपुर, सन् 1994, पृष्ठ–292–93